P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-3* June- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

क्रिया (टास्क) आधारित अधिगम पैकेज का पठन अवबोध कौशल पर प्रभाव

संतोष उपाध्याय
शोधार्थी,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

इस अध्ययन का उद्धेश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में हिन्दी भाषा में भाषायी कौशलों के अन्तर्गत पठन अवबोध कौशल पर क्रिया (टास्क) आधारित अधिगम पैकेज के प्रभाव का पता लगाना था। इस प्रायोगिक अध्ययन हेतु उदयपुर शहर के माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 9 के विद्यार्थियों के यादृच्छिक विधि द्वारा नियंत्रित एवं प्रायोगिक दो समूह बनाए गए। आंकड़ों के एकत्रीकरण हेतु स्वनिर्मित उपकरण के रूप में पूर्व एवं पश्च परीक्षण तथा क्रिया (टास्क) आधारित अधिगम पैकेज का निर्माण किया गया। प्रायोगिक समूह को 30 दिन तक इस पैकेज द्वारा शिक्षण कार्य करवाया गया तथा नियंत्रित समूह को परंपरागत रूप से पढ़ाया गया। दोनो समूहों का पूर्व एवं पश्च परीक्षण लिया गया। पैकेज के प्रभाव का पता लगाने हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी परीक्षण आदि सांख्यिकी का प्रयोग करते हुए दत्त संकलन किए गए। शोध के परिणामस्वरूप यह पाया गया कि नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूह के पठन अवबोध में समग्र रूप से अंतर पाया गया किन्तु नियंत्रित समूह के कुछ क्षेत्रों जैसे कठिन शब्द एवं शीर्षक लेखन के अतिरिक्त सभी अन्य क्षेत्रों में पूर्व एवं पश्च परीक्षण में अंतर नही पाया गया जबकि प्रायोगिक समूह में समस्त छः क्षेत्रों के पूर्व एवं पश्च परीक्षण में सार्थक अंतर पाया गया अर्थात् इन क्षेत्रों में क्रिया आधारित अधिगम पैकेज का सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

मुख्य शब्द : क्रिया (टास्क) आधारित अधिगम, पठन अवबोध, नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूह।

प्रस्तावना

भाषा शिक्षण में मुख्यतः चार प्रमुख कौशल है सुनना, बोलना, पढ़ना एवं लिखना। भाषा शिक्षण और भाषा अधिगम की दृष्टि से भाषा व्यवहार की कुशलता विविध भाषायी कौशलों के रूप में विकसित होती है। भाषा–व्यवहार मुख्यतः दो क्रियाओं पर आधारित है किसी के बोलने की क्रिया दूसरे के सुनने की क्रिया। बोलने से तात्पर्य है मनोगत विचारों को वांछित गति से इस प्रकार प्रकट करना कि श्रोता समझ सके और सुनने से तात्पर्य है वक्ता द्वारा प्रयुक्त ध्वनियों तथा उनसे बने शब्दों और वाक्यों को सुनकर उसमें निहित विचारों या भावों को समझना। भाषा शिक्षण का मूल उद्देश्य इन्हीं भाषायी कौशलों का विकास करना माना गया है। परन्तु सामान्यतः भाषा शिक्षकों द्वारा इस बात को गौण मानकर विषयवस्तु का शिक्षण या व्याकरण अधिगम पर बल दिया जाता है।

पठन

सुनने और बोलने के कौशल में दक्षता से तात्पर्य अधिकांश रूप से यह लगाया जाता है कि बच्चे पढ़े और सुने हुए को ज्यों का त्यों बोल दें। सुनने व बोलने में समझने की भूमिका को भुलाया जा रहा है जबकि समझ के बगैर सुनने का कोई महत्व नहीं। इसी तरह पढ़ने में 'समझने' की अहम भूमिका है। इसी संदर्भ में इस शोध कार्य में पठन (पढ़ना) अवबोध (समझना) कौशल पर जोर दिया गया है।

पठन–अवबोध

पढ़ने की प्रक्रिया में अवबोध शब्द उन्नीसवी शताब्दी में प्रचलित हुआ। 1916 में जड और ग्रे ने गुणवत्तापूर्ण पठन को पठन–अवबोध का नाम दिया। पिछले कई दशकों में पढ़ने की प्रक्रिया में पर कई शोध कार्य हुए है जिसमें इस बात पर सहमति जताई गई है कि पढ़ना लिखी हुई सामग्री से अर्थ निर्माण की प्रक्रिया है। एक ऐसी प्रक्रिया जिसमें कई तरह की परस्पर संम्बंधित जानकारियों की आवश्यकता होती है। पढ़ना अक्षरों एवं संकेतों को केवल डिकोड करने तक सीमित नहीं है अपितु उससे परे उसमें छिपे गूढ़ अर्थ को समझने से है आम तौर पर विद्यालयों में पढ़ना सीखने और सिखाने में वाचन पर अधिक जोर दिया

जाता है जबकि पठन समझ के साथ पढ़ना है। वाचन केवल ध्वनि प्रतीकों व शब्दों को नेत्रों की गतिशीलता के साथ–साथ पढ़ते जाना है, यह आवश्यक नहीं कि पाठक को उसका अर्थ समझ में आए। सम्भवतः वह ठीक–ठीक उच्चारण कर रहा हो, उच्चारण स्पष्ट और मानक हो, आवाज में उतार–चढ़ाव हो, उचित बलाघात का उपयोग हो रहा हो। तात्पर्य यह है कि जो भी बोला या सुना जा रहा है, वह लिखे गए शब्दों को डिकोड करना है, यह पढ़ने की प्रथम सीढ़ी है।

पठन–अवबोध की प्रक्रिया

कुशल सम्प्रेषण हेतु जितना महत्वपूर्ण बोलना है उतना ही महत्वपूर्ण पढ़ना भी है। जिसमें वह कम से कम चार प्रकार की पठन दर से पढ़ता है, क्षिप्रगामी पठन (skimming)] धारा प्रवाह (rapid)] साधारण और सावधानीपूर्वक पठन (scanning) करना।

पठन के अन्तर्गत OK4R तकनीक का प्रयोग करना चाहिए–

1. Overview अवलोकन– पठन सामग्री का पूरी तरह से अवलोकन करना।
2. Keyword मुख्य तथ्य– मुख्य शब्द संकेतों को समझना।
3. Reading पठन – तत्पश्चात सामग्री को पढ़ना।
4. Recall पुनः स्मरण – पुनः याद करना अथवा अवधान करना।
5. Reflect चिंतन – पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करना।
6. Review समीक्षा – सामग्री को पढ़कर उसकी समीक्षा करना।

क्रिया (टास्क) आधारित अधिगम

क्रिया आधारित अधिगम में क्रिया (टास्क) एक ऐसी गतिविधि है जो अधिगमकर्ता को किसी विचारयुक्त प्रक्रिया के माध्यम से दी गई सूचना प्रक्रिया पर किसी निश्चित निष्कर्ष तक पहुँचाती है एवं अध्यापक उस प्रक्रिया को नियंत्रित एवं नियमित करता है।(Prabhu 1987, Task based Language Learning and Teacher, Rod Ellis)

शक्रिया एक कक्षा–कक्ष गतिविधि है जिसका उद्देश्य भाषा द्वारा आपसी अंतःक्रिया करना है, जिसमें अर्थ पर अधिक ध्यान दिया जाता है। यह सम्प्रेषणात्मक होता है। क्रिया एक पूर्व नियोजित योजना है जिसमें कुछ शिक्षण सामग्री अथवा पाठ्य सामग्री के द्वारा गतिविधियां की जाती है, इसमें मुख्य बल अर्थ पर दिया जाता है न कि भाषा की शुद्धता पर। (Lee 2000)

प्रस्तुत शोधकार्य में क्रिया अधिगम से तात्पर्य है किसी पाठ्यवस्तु से सम्बंधित–रूचिकर प्रकरण एवं विषयवस्तु का प्रयोग करना,प्रदत्त कार्य अथवा गतिविधि का प्रयोग विचार मंथन करना,अधिकारिक भाषा का प्रयोग एवं सम्प्रेषण पर बल देना। इस उपागम के तीन मुख्य चरण है–पूर्व कार्य, टास्क एवं पश्च कार्य। इस उपागम में मूल बल इस बात पर दिया जाता है कि विद्यार्थी क्रियाशील होकर भाषा का प्रयोग करे जिसमें भाषा की शुद्धता एवं व्याकरण पर बल नहीं देकर सम्प्रेषण हेतु प्रयुक्त व्यूह रचना को महत्व दिया जाता है। जिससे विद्यार्थी अधिकाधिक सम्प्रेषणात्मक कार्य कर सके।

समस्या का औचित्य

भाषा के आधार पत्र एन.सी.एफ. 2005 में हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्यों के बारे में कहा गया है कि लेखन एक यांत्रिक कौशल नहीं है। इसमें विभिन्न संबद्ध युक्तियों तथा तत्सम्बंधी विषयों के द्वारा किसी विषय को संयोजित करने की योग्यता के साथ–साथ अपने विचार सहज एवं व्यवस्थित ढ़ंग से प्रकट करने का आत्मविश्वास विकसित करना चाहिए परंतु सामान्यतः भाषा शिक्षकों द्वारा इस बात को गौण मानकर विषय वस्तु के शिक्षण पर ही अधिक बल दिया जाता है जो मूलतः भाषा शिक्षण के उद्देश्य नहीं । इस प्रकार के शिक्षण हेतु विदेशों में कई प्रकार के नवीन उपागम एवं विधियों को विकसित किया गया है जिनमें से एक है –''क्रिया आधारित उपागम'' जिसमें क्रिया के माध्यम से सम्प्रेषण का विकास किया जाता है। अतः शोधार्थी को यह जानने को जिझासु हुई कि क्या क्रिया आधारित उपागम पर आधारित अधिगम पैकेज के माध्यम से माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में हिन्दी भाषायी कौशलों का विकास किया जा सकता है।

साहित्यावलोकन

पिकोज, बैरम नेक्टी (2001) एवं आशाक्रोफ्ट लोरा डी (2002) तथा एबस्केल एंजलिका (2002) ने अपने शोध कार्य के अन्तर्गत पाया कि विद्यार्थियों ने जितनी गंभीरता से एवं रूचि के साथ 'टास्क'' किया उतने ही सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुए। तथा टास्क द्वारा प्रायोगिक समूह ने नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन किया। उन्होंने भाषा सीखने में अधिक रूचि प्रदर्शित की। श्रीमाली भूरालाल (2007) ने क्रिया आधारित उपागम के माध्यम से संस्कृत भाषा में भाषायी दक्षता, पठन एवं लेखन कौशल के विकास हेतु प्रायोगिक अध्ययन किया जिसमें निष्कर्ष रूप में तीनों कौशलों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। देन्तीसेक डॉक चन्द्रा (2010) ने शब्द संरचना पठन पैकेज का पठन क्षमता के विकास पर प्रभाव देखा जिसमें परम्परागत तरीके से पढ़ाए गए विद्यार्थियों की तुलना में प्रायोगिक समूह ने अधिक बेहतर प्रदर्शन किया। मोरा ऑरलेना (2011) ने क्रिया आधारित पत्रक बनाकर उसका प्रयोग भाषा सीखने वाले विद्यार्थियों हेतु किया। पूर्व एवं पश्च परीक्षण के पश्चात पाया गया कि उनके भाषा सीखने के कौशल में वृद्धि हुई। कोलेन जे. थॉमसन एवं नील टी मिलिंगटन (2012) ने अपने शोध कार्य में पाया कि टास्क आधारित अधिगम करवाने में कक्षा में अपेक्षाकृत समय अधिक लगता है किन्तु इससे विद्यार्थियों में व्याकरण एवं मौखिक सम्प्रेषण में वृद्धि हुई। तांग बाओ दी न्यूएन (2013) ने मौखिक टास्क का भाषा दक्षता पर प्रभाव के अध्ययन के परिणाम–स्वरूप पाया कि क्रिया आधारित शिक्षण कक्षा–गत परिस्थितियों में अधिक प्रभावी सिद्ध होता इसी प्रकार अल्बिनो, गेवियल (2017) ने अपने शोध कार्य में टास्क आधारित उपागम का भाषा सम्प्रेषण एवं व्याकरण के प्रयोग पर प्रभाव देखा और इसका सकारात्मक प्रभाव पाया। आमेर नाडिया (2018) ने अंग्रेजी की कक्षाओं में टास्क आधारित शिक्षण का पठन अवबोध पर पड़ने वाले

प्रभाव का अध्ययन किया। निष्कर्ष रूप में यह पाया गया कि इस प्रकार के कार्य द्वारा विद्यार्थियों के पूर्व पठन कौशल में वृद्धि हुई।

समस्या कथन

'क्रिया–आधारित अधिगम पैकेज का पठन अवबोध कौशल पर प्रभाव'

शोध प्रश्न

क्या क्रिया (टास्क) आधारित अधिगम पैकेज माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में हिन्दी भाषायी कौशलों के अन्तर्गत पठन अवबोध कौशल के विकास में प्रभावी है?

शोध उद्देश्य

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में हिन्दी भाषायी कौशलों में अन्तर्गत पठन अवबोध पर क्रिया (टास्क) आधारित अधिगम पैकेज के प्रभाव का पता लगाना।

शोध की परिकल्पना

प्रायोगिक समूह के पठन अवबोध के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्यमानों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि

इस शोध कार्य के लिए प्रायोगिक शोध विधि का प्रयोग किया गया। प्रायोगिक शोध विधि के अर्न्तगत पूर्व एवं पश्च परीक्षण नियंत्रित समूह–प्रायोगिक समूह आकल्प (Pre and Post Test Control Group-Experimental Group Design) का उपयोग किया गया।

न्यादर्श

चयनित विद्यालय की 9वीं कक्षा के विद्यार्थियों का बुद्धि परीक्षण के आधार पर दो समूहों का निर्माण इस प्रकार किया गया –प्रायोगिक समूह एवं नियंत्रित समूह।

उपकरण

शोध अध्ययन में विद्यार्थियों में भाषायी कौशलों के अन्तर्गत पठन अवबोध कौशल के विकास हेतु निम्नांकित स्वनिर्मित उपकरणों का उपयोग किया गया–

पठन अवबोध सम्बन्धी पूर्व एवं पश्च परीक्षण–इसके अन्तर्गत विषय विशेषज्ञों द्वारा विषयवस्तु का अनुमोदन करने के पश्चात् प्रश्नावली का निर्माण किया गया जिसमें कहानी, निबंध एवं यात्रा वृतांत विधाओं में से छोटे–छोटे तीन गद्यांश लिए गए एवं उन पर पठन अवबोध से सम्बन्धित प्रश्नों का निर्माण किया गया। जिसमें कठिन शब्दार्थ, विलोम शब्द, समानार्थक शब्द मुहावरे, सूचना संकलन, तथा शीर्षक लेखन आदि क्षेत्र निर्धारित किए गए।

क्रिया (टास्क) आधारित अधिगम पैकेज का निर्माण

इसके अन्तर्गत उपर्युक्त क्षेत्रों पर भाषायी कौशल विकास के अन्तर्गत पठन अवबोध सम्बन्धी टास्क निर्माण करते हुए शिक्षण अधिगम सामग्री का निर्माण किया गया। इसे तीन सोपानों में विभाजित किया गया जिसमें प्री टास्क के अन्तर्गत प्रकरण से सम्बन्धित विचार मंथन,भाषायी खेल, प्रश्नोत्तर, चित्र पठन ,वर्ग पहेली, कहानी, अनुमान लगाना आदि सम्मिलित किए गए। टास्क के अन्तर्गत निर्धारित विषयवस्तु पर आधारित 'टास्क' समूह में करवाना जैसे सूची बनवाना, वर्गीकरण करवाना, सारणी बनाना, अनुभवों का आदान प्रदान करवाना, क्रमवार जमाना, समस्या समाधान एवं अन्य सृजनात्मक कार्य करवाना इत्यादि। योजना–इसके अन्तर्गत शिक्षक विद्यार्थियों से निर्धारित समूह में किए गए 'टास्क' की प्रक्रिया का प्रतिवेदन तैयार करवाते हैं। प्रतिवेदन/रिपोर्ट –योजना के अन्तर्गत किए गए कार्य की प्रक्रिया का प्रतिवेदन समूह प्रस्तुत करते हैं एवं प्राप्त निष्कर्षों की शिक्षक के सहयोग से तुलना की जाती है। अभ्यास– इसके अन्तर्गत शिक्षक पाठ में करवाए गए कार्य के आधार पर अभ्यास हेतु गृह कार्य देता है। इस प्रकार क्रिया (टास्क) आधारित सामग्री निर्माण हेतु शिक्षण सामग्री को चयनित गद्य विधाओं पर कुल 30 पाठ तैयार किए गए।

सांख्यिकीय तकनीक

इस शोधकार्य में संकलित दत्तों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन, सहसम्बन्धित मध्यमान आधारित 'टी' परीक्षण आदि सांख्यिकीय तकनीक का उपयोग किया गया।

दत्त विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रायोगिक समूह को पैकेज के माध्यम से शिक्षण कार्य करवाने से पूर्व दोनो समूहों का पूर्व परीक्षण लिया गया। 30 दिन के प्रायोगिक उपचार के पश्चात दोनो समूहों का पश्च परीक्षण लिया गया एवं उससे प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण किया गया।

क्रिया आधारित अधिगम पैकेज का प्रायोगिक समूह के पठन अवबोध पर प्रभाव

परिकल्पना

प्रायोगिक समूह के पठन अवबोध के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्यमानों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

प्रायोगिक समूह के पठन अवबोध के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्यमान, मानक विचलन एवं 'टी' मूल्य परीक्षण

प्रायोगिक समूह	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (SD)	सहसम्बन्ध (r)	टी मूल्य (t-value)	सार्थक / असार्थक अंतर
पूर्व परीक्षण	13.23	50.25	.61	8.40	सार्थक अंतर
पश्च परीक्षण	24.66	40.71			

स्वतंत्रता अंश (df) 29

सारणी मूल्य

सार्थकता स्तर – .05 स्तर पर –2.04

.01 स्तर पर – 2.76

व्याख्या

तालिका में निहित आंकड़ों से स्पष्ट है कि प्रायोगिक समूह के पठन अवबोध के पूर्व एवं पश्च परीक्षण का संगठित 'टी' मूल्य 8.40 प्राप्त हुआ है जो कि सारणी मूल्य (.05 स्तर पर 2.04 एवं .01 स्तर पर 2.76) से अधिक है।

निष्कर्ष

शून्य परिकल्पनाओं की जांच के आधार पर प्रमुख निष्कर्ष

प्रायोगिक समूह के पठन अवबोध के पूर्व एवं पश्च परीक्षण का संगठित 'टी' मूल्य 8.40 प्राप्त हुआ है जो कि सारणी मूल्य (.05 स्तर पर 2.04 एवं .01 स्तर पर 2.76) से अधिक है। अतः परिकल्पना कि प्रायोगिक समूह के पठन अवबोध के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्यमानों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है, निरस्त की गई।

उद्देश्य आधारित निष्कर्ष

पठन अवबोध पर क्रिया आधारित अधिगम पैकेज के प्रभाव का पता लगाने हेतु किए गए पूर्व एवं पश्च परीक्षण से यह निष्कर्ष प्राप्त हुए कि –नियंत्रित समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया जबकि प्रायोगिक समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षणमें अंतर पाया गया जो कि संभवतः क्रिया आधारित अधिगम पैकेज द्वारा किए गए शिक्षण के कारण हुआ होगा।

क्रिया आधारित अधिगम पैकेज का पठन अवबोध के विभिन्न क्षेत्रों पर प्रभाव संम्बंधी निष्कर्ष

पठन अवबोध परीक्षण में पठन अवबोध से सम्बंधित छः क्षेत्र निर्धारित किए गए थे इन सभी क्षेत्रों के प्रायोगिक समूह एवं नियंत्रित समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षण से प्राप्त प्राप्तांकों से निष्कर्ष प्राप्त हुए–

कठिन शब्द संम्बंधी क्षेत्र के अन्तर्गत नियंत्रित एवं प्रायोगिक दोनों समूहों के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्यमानों के मध्य अंतर पाया गया। विलोम शब्द क्षेत्र के अन्तर्गत .05 स्तर पर अंतर पाया गया जबकि .01 स्तर पर यह अप्रभावी रहा। प्रायोगिक समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षण में सार्थक अंतर पाया गया। समानार्थक शब्द क्षेत्र के अन्तर्गत नियंत्रितसमूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षण में कोई अंतर नहीं पाया गया जबकि प्रायोगिक समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षण में सार्थक अंतर पाया गया। सूचना संकलन क्षेत्र के अन्तर्गत नियंत्रित समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षण में कोई अंतर नहीं पाया गया जबकि प्रायोगिक समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षण में सार्थक अंतर पाया गया। पठन अवबोध के क्षेत्र 'मुहावरे' में किए गए नियंत्रित समूह के पूर्व और पश्च परीक्षण में .05 स्तर पर अंतर पाया गया जबकि .01 स्तर पर यह अप्रभावी रहा। प्रायोगिक समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षण में सार्थक अंतर पाया गया। शीर्षक लेखन संम्बंधी क्षेत्र के अन्तर्गत नियंत्रित एवं प्रायोगिक दोनों समूहों के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के प्राप्तांको के मध्यमानों के मध्य अंतर पाया गया।

शैक्षिक निहितार्थ

क्रिया–आधारित अधिगम पैकेज के द्वारा शिक्षण कार्य से विद्यार्थी दी गई विषयवस्तु से सूचनाएँ संकलित करते है। इससे विद्यार्थियों में पठन कौशल का विकास होता है। शिक्षक प्रशिक्षक अपने प्रशिक्षणार्थियों को इस विधि आधारित पाठ योजनाओं का निर्माण कर हिन्दी भाषा–शिक्षण में सकारात्मक परिवर्तन कर सकते है। पाठ्यक्रम निर्माण करने वाले अभिकरणों को भी यह शोध कार्य सुझाव देता है कि यदि इस विधि का पाठ्यक्रम के मूल्यांकन में प्रयोग किया जाए। सेवारत शिक्षकों को क्रिया–आधारित शिक्षण प्रक्रिया से अवगत करवाना चाहिए ताकि वे कक्षा शिक्षण में इस विधि का प्रयोग कर विद्यार्थियों में भाषायी कौशलों का विकास कर सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

Ellis, R. (2003). Task-Baseds Language Learning and Teaching, University Press,

Prabhu, N.S. (1987). Second Language Pedagogy.Oxford: University Press.

पाण्डेय, एस. (2010).हिन्दी शिक्षण : अभिनव आयाम, नई दिल्ली,एक्सिस पब्लिकेशन, नई दिल्ली,

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005). एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली

Albino G. (2017). Improving speaking fluency in a Task based Language Teaching Approach: The Case of EFL Learners at Puniv-Cazenga. Journals Sage Pub.com, April-June, Vol. I-II

Amer, N. (2018). Task Based Language Teaching on Reading Method on the Reading Comprehension, International Journal of Management and Applied Science,Vol.4issue 2,P. 98-93.

Betsone, R. (2015). Language Form, Task Based Language Teaching And Classroom Context. ELT Journal, Vol. 66 ,Issue

Huang, D. (2016).A Study on the Application of Task Based Language Teaching Method in aComprehensive English Class in Chaina. Journal of Language Teaching and Research, Vol. 7, No. 1,P. 118-127

Kalavathi T, K. Ratna Shiela M. (2017). Task Based Language Teaching, Its Implication to Improve Speaking Skills of Rural School Students– A Case Study. Journal of Humanities and Social Sciences, Vol. 22, issue 8, P.119 -126.

PageH. and Mede E.(2018). Comparing Task-Based Instruction and Traditional Instruction on Task Engagement and Vocabulary Developmentin secondary Language Education. The Journal of Educational Research 111 Vol. III, issue-3. P. 371-381

Singh, S. (2016). A Study of Relationship Between Reading Comprehension Ability and Language Learning Capacity of Secondary Students,Periodic Research, Vol. IV,Issue III , P. 125-131.

Sundari H. and Fabriyanti R. (2018). Using Task-Based Materials in Teaching Writing for EFL Classes in Indonesia. InternationalJournal of Applied Linguistics of English Literature, Vol. 7 issue 3.